ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 134-136
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

पर्यावरण सुरक्षा के प्रति विद्यालय की भूमिका का अध्ययन

सुमन्त कुमार

सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, एम0 डी0 डी0 एम0 महाविद्यालय, मुजफरपुर (बी0 आर0 ए0 बिहार विश्वविद्यालय, मुजफरपुर (बिहार) भारत

Received-29.02.2024, Revised-05.03.2024, Accepted-10.03.2024 E-mail: shumants@gmail.com

सारांश: *वर्तमान समय में पर्यावरण में क्रान्ति उत्पन्न हो गयी है। जनसंख्या के विस्फोट ने पर्यावरण के प्रति क्रान्ति ला दी है। जनसंख्या के विस्फोट ने औद्योगिक क्षेत्र के विकास पर बल दिया है, जिससे बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति की जा सके। जनसंख्या वृद्धि तथा औद्योगिकीकरण के कारण वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, परिवहन प्रदूषण तथा ध्वनि प्रदूषण आदि समस्याएँ उत्पन्न हो गई है। साथ ही औद्योगिक क्षेत्रों ने नवाचारों को बढ़ावा दिया। नवाचारों ने केमिकल आधारित उत्पादन एवं जीवन को बढ़ावा दिया है। इसके परिणामस्वरूप पर्यावरण से संबंधित समस्यायें उत्पन्न हो गयी है। इन समस्याओं ने मानव जीवन को दूभर बना दिया है। अतः इन विचारों की खोज करके उनके निवारण के लिये कार्य करने की नितान्त आवश्यकता है, जिससे पर्यावरण का संरक्षण हो सके। इस प्रकार पर्यावरण के सुधार एवं संरक्षण से संबंधित जानकारी पर्यावरणीय शिक्षा से ही संभव है। पर्यावरणीय शिक्षा का सबसे बड़ा माध्यम विद्यालय ही है।*

कुंजीभूत शब्द– क्रान्ति, प्रदूषण, संरक्षण, निवारण, माध्यम, पर्यावरणीय शिक्षा, वायु प्रदुषण, जल प्रदूषण, परिवहन प्रदुषण, नवाचारो।

पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए, पर्यावरण को स्वस्थ बनाये रखने के लिए पर्यावरण शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है और पर्यावरण शिक्षा का आवश्यक माध्यम विद्यालय है। प्रो0 एस0 के0 दुबे के अनुसार "विद्यालय के सहयोग के अभाव में जन सामान्य तथा समाज में पर्यावरणीय जागरूकता पैदा नहीं की जा सकती है क्योंकि विद्यालय ही वह आधार है, जिस पर पर्यावरणीय भवन खड़ा किया जा सकता है अन्यथा संपूर्ण प्रयास निरर्थक ही सिद्ध होंगे।" अक्टूबर 1975 में बेलग्रेड में पर्यावरणीय शिक्षा पर अन्तर्राष्ट्रीय वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप के बेलग्रेड घोषणा–पत्र में पर्यावरणीय शिक्षा के लक्ष्य तथा प्राप्त उद्देश्यों का निर्धारण किया गया। पर्यावरणीय शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य है – विश्व जनसंख्या को पर्यावरण तथा उससे संबंधित समस्याओं के सम्बन्ध में जागरूक करना। स्पष्ट है कि आज बढ़ते हुए प्रदूषण की दुनिया में पर्यावरणीय विद्यालय में विद्यार्थी पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से निम्नलिखित तथ्यों को जानने का प्रयास करता है:

1. जब विद्यार्थी प्रकृति के सम्पर्क में आता है तो उसकी निरीक्षण शक्ति बढ़ती है, वह पर्यावरण के प्रति जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक होता है जो पर्यावरणीय शिक्षा, के माध्यम से संभव है।
2. एक विद्यार्थी को पर्यावरण प्रदूषण से कौन से रोग उत्पन्न हो सकते हैं तथा इससे क्या हानि है और उनसे बचाव के उपाय कौन–कौन से हैं, इस संबंध में उसे पर्यावरणीय शिक्षा से ही जानकारी प्राप्त होती है, जिसका लाभ सम्पूर्ण समाज, समुदाय व प्रकृति को होती है।
3. पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में प्रकृति के रहस्य जानने की स्वाभाविक उत्सुकता रहती है उससे उनका व्यक्तिगत विकास होता है।
4. पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक पर्यावरण के माध्यम से सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है।
5. वैज्ञानिक दृष्टिकोण को परिपक्व बनाने के लिए तथा उसे स्वस्थ बनाने के लिए प्रकृति का सम्पर्क छात्रों के लिए आवश्यक है, जो पर्यावरणीय शिक्षा से ही संभव है।
6. विज्ञान शिक्षण के लिए भी पर्यावरण का महत्वपूर्ण योगदान है, जो पर्यावरणीय शिक्षा से संभव ही।

पर्यावरण शिक्षा पाठ्यक्रम देश का सबसे बडा समूह विद्यार्थी जगत् आता है, जो विभिन्न प्राथमिक, मध्य, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर विद्या अध्ययन करता है और जिसे कालान्तर में अपने आप का, अपने परिवार का तथा देश का उत्तरदायित्व संभालना होगा और जिन पर वृहद् जिम्मेदारी होती है। यह देश के कर्णधार और विश्व के क्षितिज पर कहीं अपनी पहचान बनाने वाले व्यक्तित्व के रूप में उभरते हैं। अतः इनको पर्यावरण के अन्दर निहित होने वाले वे सभी बिन्दुओं की जानकारी देनी चाहिए, जो उन्हें इन क्षेत्र में जानकारी अवगत कराना सार्थक प्रतीत होता है। स्वयं अपना जीवन संवारें, अपने परिवार का मार्गदर्शन करें, समाज को दिशा देंय देश को पर्यावरण की समस्याओं से बचायें और अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों में सहयोग करें यही पर्यावरणीय शिक्षा का उद्देश्य है।

उच्च विद्यालय शिक्षण स्तरों पर विषय वस्तु का समावेश किस प्रकार उचित है, उसकी एक रूपरेखा यहाँ प्रस्तावित है – उच्च विद्यालय स्तर पर विद्यार्थी में समझ का स्तर बढ़ जाता है और वह अपने स्वयं के हानि–लाभ के अतिरिक्त, सामाजिक सम्बन्धी, मूल्यपरक और मानव कल्याण तथा देश, हित के कार्यों में रूचि लेने लगते हैं। अतः विषय वस्तु से सम्बन्धित कुछ जटिलताओं से उनको परिचित कराया जा सकता है, जैसे बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणाम, खाद्यान की कमी, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, भूमि क्षरण, वन्य जीव संरक्षण आदि। विभिन्न विषयों में विशिष्ट प्रकरणों के साथ पर्यावरण दृष्टिकोण को अप्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित करने की बात पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है।

पर्यावरण संबंधी संरक्षण में विद्यालय की भूमिका को निम्न माध्यमों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है या निम्नलिखित कार्यक्रम

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

आयोजित किये जा सकते है:

1. विद्यालय को समय–समय पर पर्यावरण से संबंधित खेल, नाटक, कहानियों से विद्यार्थियों को परिचित करना चाहिए।
2. पर्यावरणीय शिक्षा के अन्तर्गत समय–समय पर दूरदर्शन, फिल्म एवं रेडियो के माध्यम से पर्यावरण संबंधी ज्ञान एवं विद्वानों के विचारों से विद्यार्थियों को अवगत कराना चाहिए।
3. विद्यालय में विद्यार्थियों को समय–समय पर संतुलित भोजन स्वच्छता एवं प्राकृतिक वातावरण के महत्व एवं उसकी उपयोगिता के विषय में बताना चाहिए और इस संबंध की जानकारी पर्यावरणीय शिक्षा के माध्यम से दी जा सकती है।
4. विद्यालय पुस्तकालय में पर्यावरण शिक्षा का साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होना चाहिए तथा बच्चों को पर्यावरणीय शिक्षा संबंधित साहित्यों को पढ़ने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए।
5. पर्यावरण संरक्षण से संबंधित कविता पाठ, कवि–सम्मेलन, संगीत सम्मेलन आदि का आयोजन किया जाना चाहिए।
6. विद्यालय में संगोष्ठियों का आयोजन कर भी पर्यावरण शिक्षा दी जा सकती है।
7. रेडियों पर आकाशवाणी के द्वारा पर्यावरणीय शिक्षा के प्रमुख कार्यक्रमों को आयोजन विद्यार्थियों को सुनाया जा सकता है।
8. पर्यावरणीय शिक्षा से संबंधित कार्यक्रम रेडियों के माध्यम से विद्वानों के विचारों को विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा सकता हैं।
9. विद्यालय में टी.वी. की व्यवस्था कर पर्यावरण संबंधी कार्टून, फिल्म, नाटक विद्यार्थियों को दिखाये जा सकते है। लोक संचार परिषद नई दिल्ली द्वारा कई अभिनयात्मक फिल्म ऐसी तैयार की गई है जो पर्यावरणीय बोध स्वरूप एवं संरक्षण द्वारा उनके रचनात्मक स्वरूप को दिग्दर्शन कराती है।
10. संसद विधान सभा या संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद के कृत्रिम 'मोकसेशन' का प्रदर्शन किसी महापुरूष के कृतित्व के विषय में प्रदर्शन आदि चलचित्र में पूर्ण नाटकीकरण कर उसकी टेपिंग कर फिल्मांकन किया जा सकता है।
11. विद्यालय में वाद–विवाद प्रतियोगिता एवं बालसभा में पर्यावरण प्रदूषण एवं उसके नियंत्रण संबंधी उपायो पर चर्चा करना चाहिए।
12. इस प्रकार वातावरण उत्पन्न करना चाहिए जिससे प्रत्येक विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति जागरूक हो जाये।

विद्यालय पर्यावरणीय शिक्षा नियमावली के पर्याप्त सहायता कोष द्वारा पर्यावरण शिक्षा को अपने पाठ्यक्रम में एकीकृत कर सकते हैं। अधिगम का यह माध्यम– जो "पर्यावरण को एकीकरण के सन्दर्भ में" प्रयोग करने के लिए जाना जाता है – पर्यावरण शिक्षा को मूलभूत विषयों में सम्मिलित करता है और इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा अन्य प्रमुख विषयों के अध्ययन के समय में व्यवधान नहीं डालती, जैसे कि कला, व्यायाम या संगीत। कक्षा मे पर्यावरण शिक्षा के पाठ्यक्रम के लिए आर्थिक सहायता के अतिरिक्त, पर्यावरण शिक्षा की नियमावली व्यवहारिक बाह्य अधिगम के लिए आर्थिक संसाधन भी आवंटित करती है। यह गतिविधियाँ और शिक्षा "स्वाभाविक न्यून विकार", का सामना करने और उसे कम करने में सहायता करती हैं और साथ ही साथ और अधिक स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित करती हैं।

हरित विद्यालय या हरित सुविधा का प्रचार, पर्यावरण शिक्षा के अन्य मुख्य घटक हैं। विद्यालयों के हरितकरण की सुविधा की औसत लागत, एक पारंपरिक विद्यालय के निर्माण की लागत और लागत के 2 प्रतिशत के योग से कुछ ही कम होती है, लेकिन इन ऊर्जा दक्ष ईमारतों से मिलने वाला प्रतिफल कुछ ही वर्षों में प्राप्त होने लगता है। पर्यावरण शिक्षा नीतियाँ विद्यालय के हरितकरण में आने वाली प्रारंभिक लागत की अपेक्षाकृत छोटी समस्याओं को कम करने में सहायता करती हैं। हरित विद्यालय नीतियाँ आधुनीकीकरण, नवीनीकरण या विद्यालय की प्राचीन सुविधाओं की मरम्मत के लिए अनुदान भी प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, स्वास्थ की दृष्टि से अच्छे भोजन का विकल्प भी हरित विद्यालयों का प्रमुख पहलू होता है। नीतियाँ विशेषकर ताजा बनाया खाना खिलाने पर विशेष ध्यान देती हैं, जोकि विद्यालय के अन्दर स्थानीय रूप से उगायी गयी उच्च गुणवत्ता युक्त सामग्रियों से बना हो।

अतः हम कह सकते हैं कि मनुष्य के अस्तित्व को भौतिक, सामाजिक तथा मानसिक रूप से उन्नत बनाने के लिये जिन तत्त्वों की आवश्यकता होती है, वे तत्त्व प्रकृति में भरे पड़े हैं। परन्तु प्रकृति के तत्त्व संतुलित होकर ही मनुष्य का विकास कर सकते हैं। प्रकृति में एक समतोल तो अपने आप में व्याप्त है। दूसरा मनुष्य ने अपनी मेधा शक्ति के बल पर स्थापित किया है। उसने पहाडों को समतल और सन्तुलित करके खेती करना, सागर को पाटकर उस पर बस्तियाँ बनाना, जल और थल के गर्भ से खनिज निकालकर बाहर लाना, विज्ञान, विद्युत तथा आधुनिक प्रौद्योगिकी के सहारे कृषि, उद्योग तथा पशुपालन में उन्नति करना, प्रौद्योगिकी के प्रयोग से मानव श्रम में कमी करना तथा मानव जीवन को सुखी एवं आरामदेय बनाना। यह सब मानव का अपना परिश्रम है, जिसके कारण प्रकृति को उसने अपने जीवन के लिये उपयोगी बनाने का प्रयास किया है, परन्तु अपने प्रयास में मनुष्य कहाँ तक सफल हुआ और भविष्य में वह और कितना सफल होगा, यह सोचने–समझने के बीच ही मनुष्य एक दूसरी दुश्चिन्ता में फँस गया। यह दुश्चिन्ता है प्रकृति का संतुलन बिगड़ने की। उन्नत तथा विकसित होने के साथ–साथ हमारी उपलब्धि ही ऐसे दुष्परिणामों को जन्म देने लगी कि प्रकृति के सहज समतोल के बिगड़ जाने का खतरा पैदा हो गया और जब प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ा तो फिर मानव भला कैसे बचेगा ? इसलिये प्रकृति के साथ हमने जो किया, आज उस पर पुनर्विचार की आवश्यकता प्रतीत हुई। डॉ0 विद्यानिवास मिश्र के शब्दों में "प्रकृति का संरक्षण सबका पावन कर्तव्य है। हमें प्रकृति का उतना ही विदोहन करना चाहिये, जिससे उसका सन्तुलन न बिगड़े। यदि मानव अब भी नहीं चेता तो हमारा विनाश निश्चित है।"

प्रकृति का क्षेत्र अधिक विस्तृत तथा रहस्यमय है जो कि पर्यावरण के साथ जुड़ा हुआ है। मनुष्य विकसित तथा सामाजिक प्राणी है इसलिए वह प्राकृतिक घटनाओं का ज्ञान व उसके कारण ढूँढ़ता है। खेत, बगीचे, नदी, झरने आदि व जन्तु आदि पर्यावरण को सुन्दर व स्वच्छ बनाते हैं। प्रकृति की गोद में बालक जाकर प्राकृतिक दृश्यों का बोध करता है और आँखों से देखकर हाथों से स्पर्श कर उन्हें

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-17, No.- I, Issues-31, YEAR- Jan.-March-2024

समझ लेता है। यूनिसेफ ने प्राथमिक स्तर पर एक योजना पर्यावरणीय शिक्षा विद्यालयों में शुरू कर दी है। इसके द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षण दिया जाता है। जिससे वे पर्यावरण के प्रति जागरूक भी हो जाते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्यागी, गुरसरनदास शिक्षा के आधुनिक सामान्य सिद्धान्त, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2012, पृ0 616.
2. जयपाल, अंजलीय पर्यावरणी शिक्षा एवं विकास, प्रो, सम्मेलन 32, पृ0 292–294.
3. शर्मा, रीताय एवं ग्रुवरेले सरोज पर्यावरण शिक्षण, भार्गव पब्लिकेशन, ग्वालियर, म0 प्र0 2005, पृ0 87.
4. शर्मा मंजू एवं चौहान राजेश कॅवर पर्यावरण शिक्षा, शिक्षा प्रकाशन जयपुर, 2007, पृ0 72–78.
5. सक्सेना के0 जी0, कृपलानी चांदनी एवं गुप्ता अनिल, पर्यावरणीय अध्ययन, यूनिवर्सिटी बुक हाऊस, नई दिल्ली, 2008, पृ0 55–62.
6. मिश्रा, महेन्द्र कुमार पर्यावरण अध्ययन, अग्नि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009. पृ0 28–39.
7. पाठक, बिन्देश्वर स्वच्छता का समाजशास्त्र, सुलभ इंटरनेशनल, सोशल सर्विस ऑर्गेनाईजेशन, दिल्ली, 2013.
8. महीपाल ''भारत में स्वच्छता अभियानः कार्यनीति और क्रियान्वयन'', राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, बसंत कुंज, नई दिल्ली, 2016.

*****